भारतीय चुनावों में उभरती नवीन प्रवृत्तियाँ — (B.A.I)

भारत की ख्याति विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में है और इस लोकतंत्र का आधार चुनावी राजनीति है। 29 राज्यों वाले इस विशाल देश में शायद ही कोई ऐसा वर्ष रहता हो जब किसी भी स्तर पर चुनाव न होते हों। वर्ष 1991 के बाद अर्थव्यवस्था के उदारीकरण ने लोकतंत्र, राजनीति, निर्वाचन आदि को भी प्रभावित किया और चुनावों में अनेक नवीन प्रवृत्तियों का उदय हुआ। सूचना एवं संचार क्रांति के आगमन के साथ तो राजनीति तथा चुनावों का स्वरूप ही बदल गया। ऐसी परिस्थिति में भारत में हाल के चुनावों में उभरी प्रवृत्तियों और उनके प्रभाव का अध्ययन एवं विश्लेषण आवश्यक प्रतीत होता है।

① मतदाताओं की बढ़ती संख्या — वर्तमान में चुनावों का सबसे अच्छा पहलू यह है कि मतदाताओं का रुझान और मतदान-प्रतिशत निरंतर बढ़ता जा रहा है। इस संदर्भ में निर्वाचन आयोग के प्रयास सराहनीय रहे हैं। आयोग द्वारा 25 जनवरी को 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' के रूप में मनाने, मतदाता सूची में आनलाइन नामांकन की सुविधा, जन जागरूकता हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन आदि के कारण चुनावों में मतदाताओं की सहभागिता बढ़ाने में मदद मिली है।

② मत प्रतिशत में वृद्धि — बढ़ते मत प्रतिशत के कारण, चुनावों में अवैध तथा अनैतिक साधनों के प्रयोग की संभावना घटती है तथा जनमत का वास्तविक रूप प्रतिनिधि सभाओं में दिखायी देता है। भारी मतदान और मतदाताओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता से यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय जनता लोकतंत्र एवं राजनीति को लेकर उदासीन नहीं है और अपनी शक्ति को पहचानती है।

③ सोशल मीडिया की भूमिका — चुनावों को प्रभावित करने में फेसबुक, ट्विटर, यू-ट्यूब आदि जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स की भी विशेष भूमिका है। विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श तथा जनमत के निर्माण में सोशल मीडिया ने प्रभावी भूमिका निभाई है। जनता तक अपनी पहुँच बनाने हेतु विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ तथा प्रत्याशी भी सोशल मीडिया में सक्रिय होकर मतदाताओं को लुभाने का प्रयास करते हैं।

④ विकास और जनहित का अधिक महत्व — भारतीय जनता की धारणा सामान्यतः भावुक मतदाता की रही है, जिन्हें विभिन्न संवेदनशील एवं भावना-प्रधान अपीलों के आधार पर प्रभावित करने का प्रयास राजनीतिक दल करते हैं। विशेष रूप से 90 के दशक में 'मंडल-कमंडल' की राजनीति के समय यह प्रवृत्ति हावी रही। लेकिन विगत लगभग एक दशक से मतदाता थोथे भावुक मुद्दों के बजाय विकास एवं जनहित को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। निश्चित रूप से शिक्षा एवं जागरूकता के बढ़ते स्तर ने मतदाताओं को तार्किक निर्णय लेने में सहायता की है।

Scanned with CamSc

(5) युवा वर्ग को प्राथमिकता — वर्तमान समय में भारत की बहुलांश आबादी युवा वर्ग में आती है। इसलिए सभी राजनीतिक दल युवाओं के मुद्दों को प्राथमिकता दे रहे हैं तथा अपनी पार्टी में भी युवा चेहरों को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। लेकिन इस स्थिति का कुरूप आयाम यह है कि विकलांग, आदिवासी, गंभीर बीमारियों से पीड़ित व्यक्ति, तेजाब हमलों के शिकार आदि जैसे लोग, जिन्हें अधिक सहायता की आवश्यकता है — उपेक्षित हो रहे हैं, क्योंकि वे किसी आकर्षक वोट-बैंक का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

(6) खर्चीले चुनाव व भ्रष्टाचार में वृद्धि — चुनाव दिन-प्रतिदिन ज्यादा व्यय साध्य और खर्चीले भी होते जा रहे हैं। पंचायत से लेकर लोकसभा तक प्रत्याशी चुनावों में भारी धनराशि खर्च करते हैं। इसमें अवैध गतिविधियों से प्राप्त धन की बड़ी भूमिका होती है। इस परिदृश्य में ईमानदार व्यक्तियों का चुनाव लड़ना व जीतना बहुत कठिन हो गया है। चुनाव के बाद विजयी प्रत्याशी अपने 'वित्त-पोषकों' को उपकृत करने का प्रयास करता है जिससे व्यवस्था में भ्रष्टाचार पनपता है।

(7) चुनाव एक व्यवसाय के रूप में — वस्तुतः चुनावों ने करोड़ों के एक व्यवसाय का रूप ले लिया है। चुनावों के समय प्रचार करने वाले, भीड़ जुटाने वाले, प्रचार-सामग्री तैयार करने वाले, रैलियों के प्रबन्धक आदि इस व्यवसाय से जुड़कर भारी मुनाफा कमाते हैं। चुनाव प्रचार प्रबन्धकों, विज्ञापन एजेंसियों, 'इमेज' गढ़ने वालों आदि ने मिलकर चुनावों को बहुत जटिल बना दिया है।

(8) मीडिया द्वारा छवियों को गढ़ना — यदि मतदाता किसी प्रत्याशी को व्यक्तिगत रूप से न जानता हो तो उसके लिए प्रत्याशी के चरित्र एवं उपयुक्तता के सम्बन्ध में निर्णय करना असम्भव सा हो गया है क्योंकि मीडिया तथा 'इमेज' बनाने वालों ने छवियों का व्यापार प्रारम्भ कर दिया है। उदाहरण के लिए अनेक बार आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों को 'कर्मठ तथा जुझारू' बताया जाता है तो आदर्शवादी या ईमानदार चरित्र वालों को 'कढ़ीवादी या निष्क्रिय' बताकर उन्हें खारिज करने की कोशिश की जाती है।

(9) नैतिकता और सिद्धान्तों का क्षरण — इस प्रकार के नवीन परिदृश्य में मतदाताओं के लिए उचित-अनुचित या सही-गलत का निर्णय करना बेहद जटिल हो गया है। राजनीति में नैतिकता, सत्यनिष्ठा, शुचिता तथा सिद्धान्तों का स्तर गिरता जा रहा है और जनहित के मुद्दों पर चर्चा के बजाय विरोधियों के व्यक्तिगत जीवन पर चर्चा को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है। यह आश्चर्यजनक है कि ऐसी प्रवृत्तियाँ समूचे विश्व में दिखायी दे रही हैं। अमरीकी राष्ट्रपति के विगत चुनाव प्रचार में दोनों के मुखे राजनीतिज्ञों ने मर्यादा की सारी सीमाएँ लाँघकर गालीनुमा भाषा का प्रयोग किया था। ऐसी प्रवृत्तियाँ लोकतंत्र की गरिमा के लिए घातक हैं।

Scanned with CamSc

(10) प्रवासी भारतीयों को आकर्षित करना — वैश्वीकरण के वर्तमान परिदृश्य में मानव की एक देश के भीतर तथा देश के बाहर भी आवागमन बढ़ा है। राजनीतिक दल ऐसे मतदाताओं को लुभाने के लिए भी विभिन्न साधनों का सहारा ले रहे हैं। निर्वाचन आयोग ने इस ओर भी ध्यान केन्द्रित किया है तथा विदेशों में बसे आनेवाली भारतीयों के मतदान के समय बुलाने हेतु हवाई यात्रा की धनराशि देने को अनुचित गतिविधि माना है।

निष्कर्ष — (Conclusion) समग्र रूप से देखा जाय तो भारतीय लोकतंत्र और चुनाव क्रमशः परिपक्व होते जा रहे हैं। लेकिन मतदाताओं को एक जागरूक प्रहरी की भूमिका निभानी होगी ताकि लोकतंत्र की गरिमा अक्षुण्ण रहे।

Scanned with CamSc